L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A. PART - II
PAPER - Social psychology - II
Psychology (Honours)
Topic - Characteristics of perception.

Dr. PRAMOD KUMAR SAHU
Assistant Professor.
Guest Teacher.
V.S.J. College, RAJNAGAR
MADHUBANI (BIHAR)
Pramod Kumar dbg 2018 @ gmail.com.

(i) प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है। (perception is a complex mental process)

प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है। प्रत्यक्षीकरण का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि इसके अंतर्गत कई उप-प्रक्रियाएँ होती पायी जाती हैं, जैसे - ग्राहक प्रक्रिया (receptor process) प्रतीकात्मक प्रक्रिया (symbolic process) भावात्मक या रागात्मक प्रक्रिया (affective process) एवं संगठनात्मक या एकीकरण की प्रक्रिया। ग्राहक प्रक्रिया में ग्राहक तंत्र क्रियाशील होता है जिसका प्रभाव मस्तिष्क के संवेदी क्षेत्र या ज्ञानवाही क्षेत्र पर पड़ता है। संवेदी क्षेत्र के अतिरिक्त मस्तिष्क के साहचर्य क्षेत्र पर भी वातावरण में उपस्थित उत्तेजना का प्रभाव पड़ता है। जिसके फलस्वरूप अन्य प्रक्रियाएं, यथा - प्रतीकात्मक (symbolic) भावात्मक एवं संगठनात्मक प्रक्रियाएँ होती हैं और तब हमें उस वस्तु विशेष का प्रत्यक्षबोध या प्रत्यक्षीकरण होता है। वस्तुतः, प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है।

(ii) प्रत्यक्षीकरण से उपस्थित उत्तेजनाओं का तात्कालिक ज्ञान होता है। (perception is immediate knowledge or apprehension of the present stimuli)

प्रत्यक्षीकरण अपने आप में स्वयं कोई ज्ञान या अनुभव नहीं है। बल्कि यह ज्ञान प्राप्त करानेवाली एक मानसिक क्रिया है। इस मानसिक क्रिया द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण में उपस्थित होनेवाली विभिन्न उत्तेजनाओं के संबंध में तात्कालिक ज्ञान प्राप्त करता है। ज्ञान प्राप्त करने के कई तरीके हो सकते हैं, जैसे - किसी उत्तेजना की अनुपस्थिति में हम उसके बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार की मानसिक क्रिया को स्मृति कहते हैं। इसी तरह कुछ उत्तेजनाओं का सम्यक ज्ञान हमें दूसरे द्वारा बताए

जाने अथवा प्रशिक्षण एवं अभ्यास के फलस्वरूप तात्कालिक न होकर उत्तेजना के उपस्थिति होने के कुछ समय बाद, अर्थात् विलंब से होता है। इस तरह से प्राप्त ज्ञान को सीखना कहते है। प्रत्यक्षीकरण का स्वरूप इन दोनों से भिन्न होता है। प्रत्यक्षीकरण में उत्तेजना का हमारे सामने उपस्थित रहना आवश्यक होता है। तथा जैसे ही वह उत्तेजना ज्ञानेन्द्रियों के संपर्क में आती है वैसे तुरत ही मानसिक क्रियों के फलस्वरूप उक्त उत्तेजना का अर्थपूर्ण ज्ञान होता है। इसी तात्कालिक ज्ञान को प्रत्यक्षीकरण कहते है। अतः उपस्थित उत्तेजना का तात्कालिक ज्ञान प्राप्त करानेवाली मानसिक क्रिया को प्रत्यक्षीकरण कहते है।

(iii) प्रत्यक्षीकरण एक सक्रिय मानसिक प्रक्रिया है।
(perception is an active mental process)

प्रत्यक्षीकरण एक सक्रिय मानसिक प्रक्रिया है। संवेदना की तरह प्रत्यक्षीकरण मात्र वह दर्पण नहीं है। जिससे हमें वातावरण में उपस्थित वस्तु या व्यक्ति का केवल आभास या प्रतिच्छाया मिलता है। इसमें कुछ अन्य क्रियाएँ भी होती है। जिसके फलस्वरूप उस वस्तु या व्यक्ति से प्राप्त संवेदी संकेतों और उनसे संबद्ध पूर्व अनुभवों को संगठित किया जाता है। इस संगठन के परिणामस्वरूप ही उत्तेजना के निर्दिष्ट और संगठित किया जाता है। इस संगठन के परिणामस्वरूप ही उत्तेजना के निश्चित और सार्थक स्वरूप का अनुभव होता है। किसी उत्तेजना के इस अनुभव में उत्तेजना - भेद का हू-ब-हू प्रतिबिम्ब नहीं होता बल्कि प्रत्यक्षीकरण में वस्तु उसके विभिन्न अंगों के पारस्परिक संबंधों, वस्तु में विद्यमान विशेष तथा महत्वपूर्ण विशेषताएँ आदि शामिल रहती है।

(iv) प्रत्यक्षीकरण चयन की एक सक्रिय प्रक्रिया है।
(perception is an active process of choice):

व्यक्ति के सम्मुख वातावरण में एक ही साथ कई उत्तेजनाएँ उपस्थित होती है। लेकिन सभी उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं है। व्यक्ति केवल उन्हीं वस्तुओं का प्रत्यक्षीकरण करता है। जो उसकी

अवधान परिधि में आती है। अन्य वस्तुएँ व्यक्ति के अवधान परिधि के बाहर रहती है। इसलिए उनका प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं होता। अब यहाँ एक प्रश्न यह उठता है कि कौन-सी वस्तु अवधान परिधि अथवा अवधान केंद्र तथा कौन अवधान परिधि से बाहर रहती है। यह वस्तु या उत्तेजना विशेष की कुछ विशेषताओं जैसे - तीव्रता, नवीनता, पुनरावृत्ति आदि एवं प्राणी की व्यक्तिगत विशेषताएँ जैसे - प्रेरणाएँ इच्छाएँ आवश्यकताएँ, आदि पर निर्भर करता है। प्राणी की व्यक्तिगत विशेषताओं का वातावरण में उपस्थित वस्तुओं के चयन करने में महत्वपूर्ण स्थान होता है। व्यक्ति अपनी प्रेरणा, इच्छा या आवश्यकता के आधार पर वातावरण में उपस्थित वस्तुओं का चयन करता है। और इस प्रकार चुनी गई वस्तुएँ उसके अवधान केंद्र में आती है। जिनका वह प्रत्यक्षीकरण करता है। इसी विशेषता के कारण प्रत्यक्षीकरण को चयनात्मक मानसिक प्रक्रिया कहा गया है। प्रत्यक्षीकरण व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक स्थितियों पर निर्भर करता है। उन्होंने समान तरह के लड़के के दो समूहों का परीक्षण किया एक जो भूखे थे और दूसरे जो भूखे नहीं थे। दोनों समूह के लड़कों को एक पारदर्शी पर्दे के पीछे रखी गई कुछ अस्पष्ट आकृतियों को अभ्यास के लिए दिखाकर वर्णन करने को कहा गया। उन्होंने पाया कि जो भूखे लड़के थे। उन्हें अस्पष्ट आकृतियों का प्रत्यक्षीकरण खाद्य सामग्री के रूप में हुआ।

(V) प्रत्यक्षीकरण में ग्राहक एवं स्नायु-संबंधी क्रियाएँ अंतर्निहित रहती है।

प्रत्यक्षीकरण में उत्तेजना का उपस्थित होना अनिवार्य है। वातावरण में उपस्थित होनेवाली उत्तेजनाएँ हमारी ज्ञानेन्द्रियों के संपर्क में आती है। जिसके परिणामस्वरूप ग्राहक तंत्र क्रियाशील होता है। इस तंत्र के क्रियाशील होने के फलस्वरूप स्नायु प्रवाह चलते हैं। जो ज्ञानवाही तंतुओं द्वारा मस्तिष्क के ज्ञानवाही या संवेदी क्षेत्र में पहुँचते हैं। और इस प्रकार

उपस्थित उत्तेजना की संवेदना होती है। इसके बाद मस्तिष्क में उत्तेजना से संबंधित पूर्व अनुभवों के संकेत जागृत होते हैं। मस्तिष्क के बाह्यतम भाग उपस्थित उत्तेजना से प्राप्त संवेदी विवरणों एवं पूर्व अनुभवों से संचित संकेतों को संगठित कर निश्चित अर्थ प्रदान करते हैं जिससे उत्तेजना वास्तविक रूप में परिणत हो जाती है। जिसे प्रत्यक्षीकरण कहते हैं। इस प्रकार, मस्तिष्क में ग्राहक प्रक्रिया द्वारा प्राप्त संवेदी विवरणों के पूर्व अनुभवों के प्रतीकों की सहायता से संगठन-संबंधी निहित होती है। जिसके परिणाम स्वरूप प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया होती है। अतः प्रत्यक्षीकरण में ग्राहक एवं स्नायु संबंधी निहित क्रियाएं होती हैं।

(vi) प्रत्यक्षीकरण उत्तेजनाओं का संगठन है।

प्रत्यक्ष मन में उत्तेजना का संगठित स्वरूप प्रकट होता है। वातावरण की जिन उत्तेजनाओं का हमें प्रत्यक्षीकरण होता है, वे एक विशेष प्रकार से व्यवस्थित और संगठित रहती हैं जैसे - जब हम किसी वस्तु या व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण करते हैं।

(vii) प्रत्यक्षीकरण में स्थिरता के लक्षण पाए जाते हैं।

प्रत्यक्षात्मक अनुभवों में स्थिरता का होना एक मुख्य विशेषता है। उत्तेजना की परिस्थिति में परिवर्तन होने पर भी यह देखा जाता है कि उसका प्रत्यक्षीकरण प्रायः अपरिवर्तित रहता है।

(viii) प्रत्यक्षीकरण में स्थिरता के गुण के अतिरिक्त लोच या लचक का भी गुण पाया जाता है।

प्रत्यक्षीकरण में स्थिरता के गुण का होना इसकी प्रमुख विशेषता है। फिर भी कुछ ऐसे भी दृष्टांत देखने को मिलते हैं जिससे यह पता चलता है कि उत्तेजना में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होने पर भी व्यक्ति को एक ही उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण भिन्न-भिन्न समय में अलग-अलग होता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Date - 07/05/2020

Scanned with CamScanner